मन्दिर

फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट

FORM I

(See Rule 8)

Place of Publication	Hoshiarpur
Date of Publication	10th of every month
Periodicity of Publication	Monthly
Printer's Name	M. R. Bhagat
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Hoshiarpur
Publisher's Name	M. R. Bhagat
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Hoshiarpur
Editor's Name	M. R. Bhagat
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Sutehri Road, Hoshiarpur.
Name and address of individuals, who own the Manav Mandir or partners, or shareholders, holding more than one percent of the total capital.	Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

I, M. R. Bhagat hereby decclare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Dated : 7-8-79 *Signature of Publisher*

Printed and Published by M. R. Bhagat at Shiv Dev Rao Press, Manavta Mandir, Hoshiarpur. for the Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

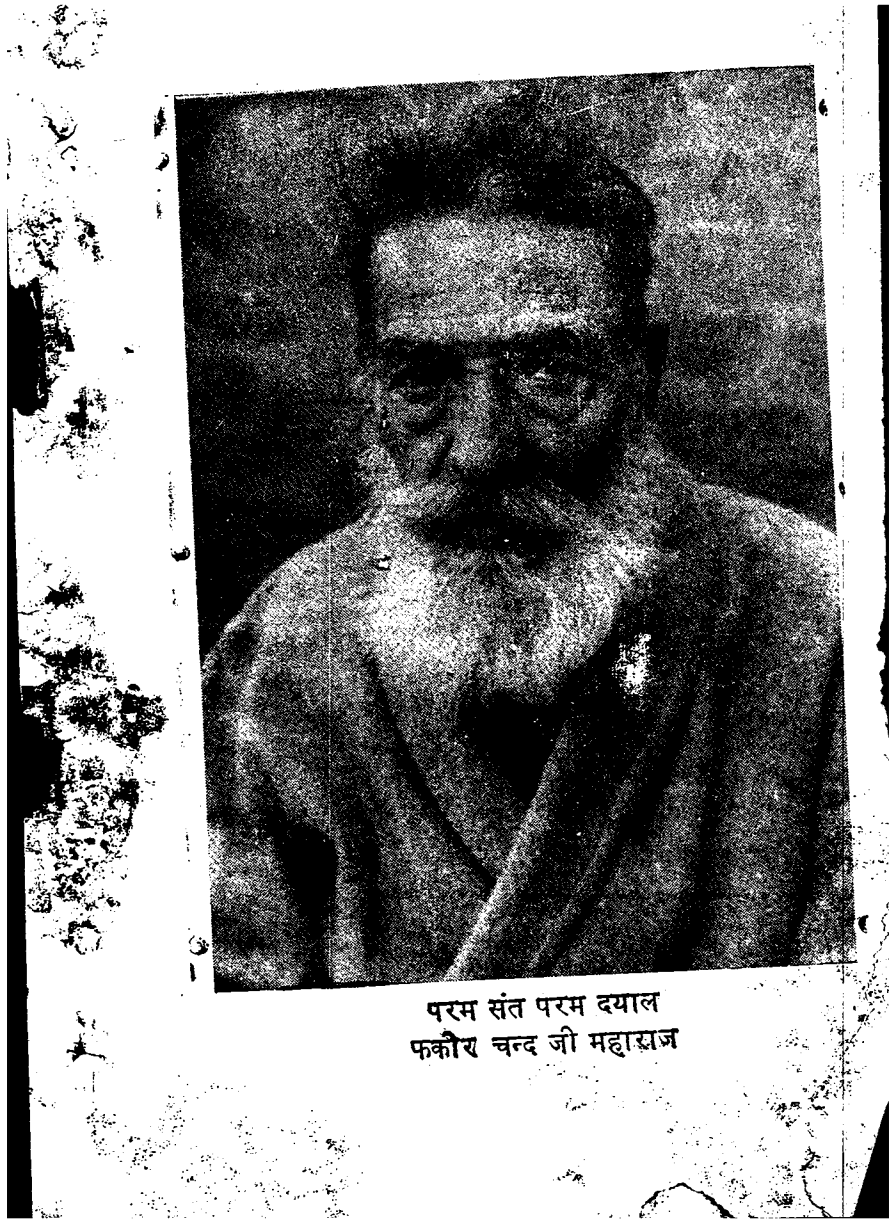

परम संत परम दयाल
फकीर चन्द जी महाराज

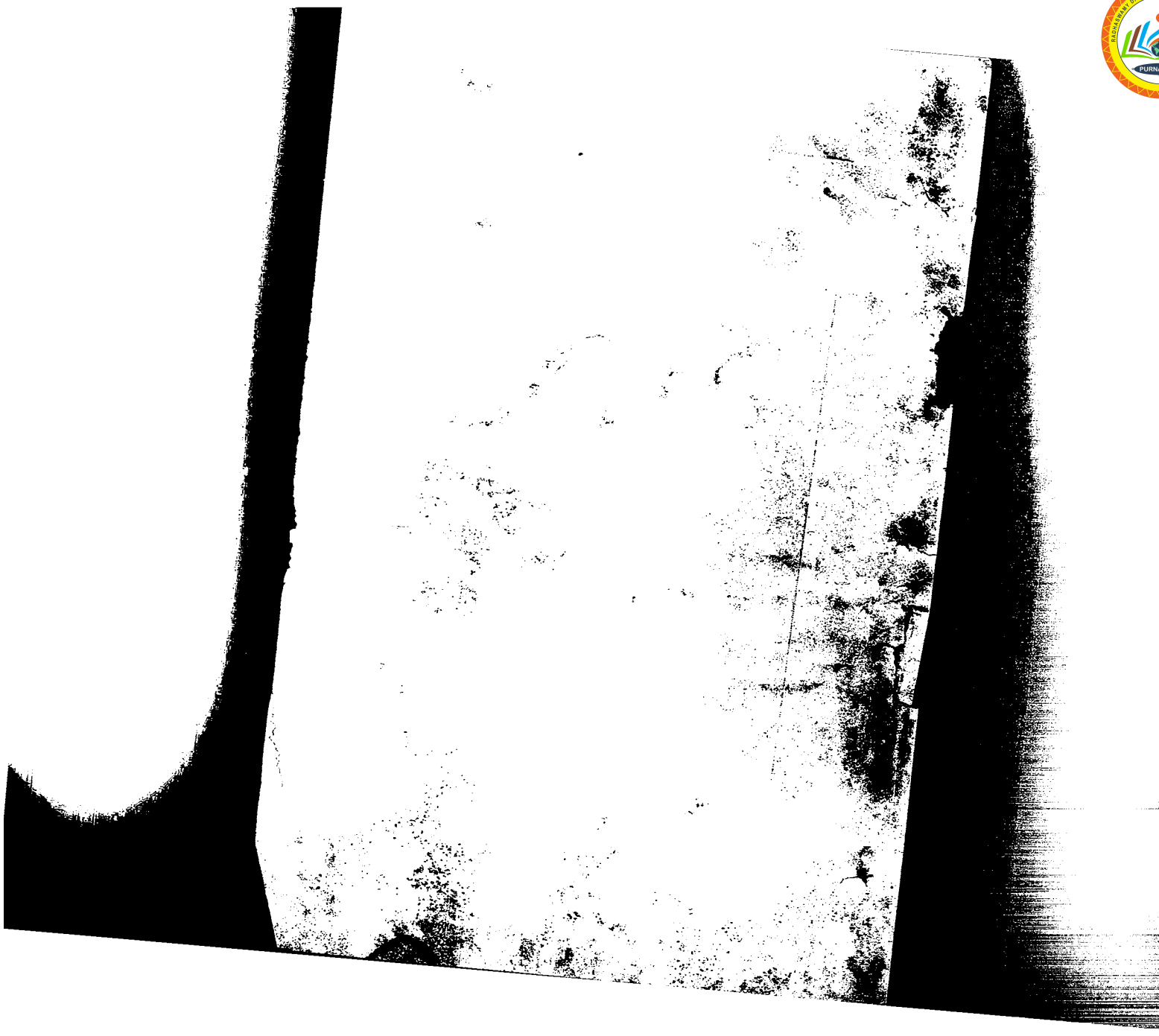

मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :— एम. आर. भक्त
पी. एस. ई (रीटायर्ड)

वर्ष 6	सोमवार 11 फरवरी, 1980	संख्या 10

आद घर का रास्ता

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर ।

दिनांक १८ नवम्बर १९७९

मंगल मय गुरु चरन, ताप श्रत्र हर लेन वाले ।
भव दुख सकल मिटाय, शान्त पद देने वाले ।।

भव सागर अति अगम पंथ, नहीं सूझे कोई ।
शब्द जहाज़ चढ़ाय, पार गुरु कीन्हा सोई ।।

बूढत रहे मंझधार, मिला नहीं कोई सहाई ।
आये गुरु दातार, बांह गह मेरी ठौर लगाई ।।

नाम रूप का भेद दिया, भरम भेद मिटाया ।
पद अभेद दरसाय, भेद का फन्द छुड़ाया ।।

राधा स्वामी पद कमल मन मधुप लुभाना।
मन बानी से परे मिला, धुर पद निरवाना ॥

राधास्वामी,

ये शब्द मैंने सुना अपनी आत्मा से हीं सवाल करता हूं क्या गुरु के बाहर के चरणों को पूजते रहने से शांति मिल सकती है ? जब तक किसी की समझ ठीक नहीं है शांति का मिलना मुशकिल है। मेरे पास कई आदमी आते हैं बाबा जी, हम अशांत हैं हमें शान्ति प्रदान करें। मैं कहता हूं भई, मैं फूंक मार कर तुमको शांति नहीं दे सकता, किसी और गुरु के पास चले जाओ। दुनियां की चीज़ों के लिये अगर इन्सान का ख्याल ठीक है तो वो उसका कर्म बन जाता है। मगर शांति हमेशा ज्ञान, समझ और विवेक से मिलती है। जीव जन्तु और इन्सान इस दुनियां में पैदा होते हैं। स्वाभाविक ही आनन्द और खुशी चाहते हैं। मगर यह दुनियां त्रिगुर्णात्मक जगत है। यहां जहां सुख है वहां दुख भी है। जहां जीवन है वहां मौत भी है। जहां जवानी है वहां बुढ़ापा भी है। कोई बच नहीं सकता। हकीकत और असलीयत कैसे मिलती है ? किसको मिलती है

आज मैं इस सम्बन्ध में बताऊंगा। शब्द है :—

अज्ञान का फन्दा कटा देना, गुरु ज्ञान की जोति दिखा देना-टेक
क्या हूं कहां हूं कौन हूं, कहां से आया भाग।
तुम कैसे मिले अब मुझे, क्यों चित बढ़ा अनुराग॥
यह अकथ कहानी सुना देना॥ अज्ञान
विद्या अविद्या वस्तु क्या, जन्म मरण क्यों होय।
ईश जीव सम्बन्ध क्या, समझे क्यों कर कोय॥
भली भांति यह मरम समझा देना॥ अज्ञान
जन्म न लेना हानि क्या, जन्म लिया तो लाभ क्या।
जन्म मरन में दुख महा, कौन उसे है चाहता॥
बस गुत्थी को तुम सुलझा देना॥ अज्ञान०
परमारथ व्योहार क्या, क्या है इसमें भेद।
किस विधि बरने यह विषय, शास्त्र स्मृति वेद॥
जो तत्व हो उसे बता देना॥ अज्ञान०
भरम जाल के फॉस में, फंस पाया बहु दुख।
अब गरु का संग मिला, मन कुछ पावे सुख॥
राधास्वामी निज पंथ लखा देना॥ अज्ञान०

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं, कि क्या तेरा अज्ञान का फन्द कट गया है ? अगर कट गया है तो कैसे कटा ? किसी का शायद किसी तरह कटा हो, किसी

का किसी तरीके से कटा हो, जिस तरीके से मेरा कटा मैं वो बता सकता हूं। सवाल ये है कि जिस फन्द में हम यहां फंसे हुए हैं और दुख सुख उठाते हैं, वो क्यों हैं ? क्योंकि हमको अज्ञान है। अज्ञान कहते हैं किसी चीज़ की यथार्थ जानकारी न रखने को,

क्या हूं, कहां हूं, कहां से आया भाग।
तुम कैसे मिले अब मुझे क्यों चि बढ़ा अनुराग ॥
ये अकथ कहानी सुना देना ॥

जब तक ये किसी इन्सान को पता नहीं लगता कि मैं कौन हूं, कहां से आया हूं, क्या हस्ती है, कोई लाख कोशिश करे कि उसको शांति मिल जाये ये हो ही नहीं सकता, एक अस्थाई हालत इन्सान की आ जाती है उसमें वो आनन्द लेता है। मगर वो आनन्द हमेशा आदमी के पास नहीं रहता। अगर कोई ये कहे कि दुनियां में रहता हुआ उसकी सारी आयु ही बिना किसी चिन्ता के गुज़र जाये तो ये इस दुनियां का दस्तूर नहीं है। क्यों दस्तूर नहीं है ? क्योंकि ये दुनियां ही ऐसी है जिस creator ने दुनियां को

बनाया है । काल ने या भगवान ने, उसने दुनियां ऐसी ही बनाई है तुम दुनियां को देखो, पेड़ पैदा होते हैं, उनको कीड़े खाते हैं, उन कीड़ों की वजह से डी. डी. टी हवाई जहाज़ द्वारा छिड़की जाती है । अनेक प्रकार के कीड़े जीव जन्तु मर जाते हैं और कितने ही जलवायु के कारण पैदा हो जाते हैं, वर्षा के कारण कितने मर जाते हैं मैंने क्या समझा कि मैं कौन हूं और मैं कहाँ से आया हूं, जो कुछ मैंने समझा वो आपको बताना चाहता हूं, दिमाग़ वाले आदमी सोचें कि हम सब कहां से आये हैं । मां के पेट में क्या चीज़ आई ? आदमी के वीर्य का एक कीड़ा । वो बढ़ गया और अब फकीर चन्द या कहीं किसी और के रूप में बोलता है । जब मां के पेट में आता है तो वो एक किटाणु होता है जो आंखों से नहीं देखा जाता बल्कि खुर्दबीन से देखा जाता है । इस कीड़े में कर्म इन्द्रियां या ज्ञान इन्द्रियां इस प्रकार छुपी होती हैं जिस प्रकार बड़ के बीज के एक छोटे से दाने के अन्दर कितना बड़ा भारी पेड़ है । वो कीड़ा कैसे बनता है ? क्या ऊपर वायु से उड़कर आता है ? नहीं । जिस प्रकार गन्दे पानी में कीड़े होते हैं । इसी प्रकार इन्सान के

शरीर के अन्दर किटाणु पैदा होते हैं। तो हमारा आद क्या हुआ ? वीर्य का एक कीड़ा अमर कोई ये देखना चाहता है कि मैं दरअसल कौन हूं और कहां से आया हूं तो जब तक हम मन को इक्ट्ठा करके अपने आप को वापस उस अवस्था में नहीं ले जाते जो अवस्था हमारी उस वीर्य में किटाणु की थी,, तब तक हमारा अज्ञान दूर नहीं हो सकता। दूसरे शब्दों में जब तक इन्सान का मन अमन न होगा या समाधिष्ट नहीं होगा,अन्तर ठहरेगा ही नहीं, तब तक उसकी बुद्धि इस बात के समझने के योग्य नहीं हो सकती, मन जब इकट्ठा होता है और मन-चित्, बुद्धि, अहँकार जब इकट्ठे होकर एक जगह काम करते हैं, उसमें एकाग्रता सोच विचार की ताकत और धारणा आती है, तब इन्सान को बुद्धि प्राप्त होती है। इस वास्ते हमारे हिन्दू शास्त्रों ने 9 साल के बच्चे को ये गायत्री मंत्र दिया था जिसका मतलब ये है कि जाग्रत, स्वप्न सुषुप्ति से परे प्रकाश रूपी सूर्य के दर्शन करो वो तुम्हारी बुद्धिका प्रेरक होगा। जब तक मन, बुद्धि चित् अहंकार, बिखरे रहेंगे या इन्हान का ध्यान अनेक प्रकार की आशाओं में फंसा रहेगा, तब तक वो ज्ञान प्राप्त

नहीं कर सकता। अमली दुनियां के हिसाब से बेशक इन्सान कुछ हासिल करले मगर वो वाचक ज्ञान कहलाता है। यथार्थ ज्ञान नहीं होता यथार्थ ज्ञान ये है कि साधन थोड़ा थोड़ा करके अपने आपको अपने अन्तर में शारीरिक बोधमान और मानसिक बोधमान इन दोनों को इकट्ठा करो, उस अवस्था का नाम सन्तों ने सुन्न और महा सुन्न रखा हुआ है और सनातनियों ने उसका नाम सविकल्प और निर्विकल्प समाधि रखा है। तो जब तक कोई व्यक्ति वहां न जायेगा, दूसरे शब्दों में जब तक इन्सान अपने अन्तर में शारीरिक और मानसिक बोधभानों को भूलेगा नहीं तब तक उसको गुरु की बात समझ में नहीं आयेगी, गुरु ज्ञान प्राप्त नहीं होगा और उसका अज्ञान का कारण जायेगा नहीं। आगे है प्रकाश और शब्द। सतगुरु नाम है सच्चे ज्ञान का। दुनियां ने यह समझा हुआ है कि गुरु की देह सतगुरु है। मेरा हो या किसी और का हो, ये बच्चों के लिए है, जिनके दिमाग़ अभी विकसित नहीं हुए हैं। तो जब तक हम मन के संकल्पों को छोड़कर अपने आपको निर्विकल्प समाधि में नहीं ले जाते जिसका नाम संतमत में मानसरोवर है अपने आपका ज्ञान प्राप्त

नहीं होना। चीज़ एक ही है मगर अलग अलग शब्दों में वर्णन किया हुआ है। मेरी वर्णन शैली सब सेवक के लिए एक जैसी है इस लिए मन को इकट्ठा करने और इस निर्विकल्प समाधि को प्राप्त करने के लिये ही सन्तों ने ये सुमिरण, ध्यान, तमाम आदमियों को दिया है।

ताकि फिर अनुभव हो जाये कि मैं कौन हूं। प्रकट रूप में हम कौन हैं ? एक कीड़े। वो कीड़ा कैसे पैदा हुआ ? बाप के खून से, बाप का वीर्य नहीं बन सकता जब तक कि सूर्य चांद और सितारों की रौशनी से जो ख़ुराक बनती है वो न खाई जाये, तो हमारा असली आद घर क्या है ? वो है प्रकाश जिसको हिन्दू लोग ब्रह्म कहते हैं। इस वास्ते मैं ने क्या समझा ? मेरा अज्ञान कैसे मिटा ? यह समझ आई कि मैं न तो देह हूं, न मैं मन हूं, दोनों से अलग हूं। जो इन्सान सारा जीवन परमार्थ को लेकर किसी गुरु या आश्रम को ही पूजता रहेगा वो लक्ष स्थान तक नहीं पहुंच सकता। कोई महात्मा ये बात नहीं कहता, मैं कहता हू, आज़माई हुई बात है।

आजकल गुरु मत में एक ऐसा पाखण्ड, धोखा और फरेब है जिसका कोई हिसाब नहीं। मगर मैं ऐसा कहने का अधिकार भी नहीं रखता क्योंकि हमारे छोटे बच्चे होते हैं उनको तो समझ नहीं होती हम झूठ बोलते हैं और उनको कुछ हौसला देते हैं। इसी प्रकार ये जितने भी मज़हब हैं ये सब जीव की अशांति को दूर करने के लिए एक सहारा देते हैं, ये न कहना कि मैं दूसरे गुरुओं का खण्डन करता हूं। कोई पहली कक्षा में पढ़ता है, कोई तीसरी चौथी में, प्रत्येक कक्षा के लिए अलग अलग किताबें होती हैं। ऐसे ही सत्संगियों को भी उनको प्रकृति के अनुसार अलग अलग विचार दिये जाते हैं। मगर असलीयत में जब तक इन्सान अपने अन्तर, अपने मन को इकट्ठा करके, अपने आपको खुद प्रकाश में न ले जाये तब तक वह अगली मंज़िल में नहीं जा सकता। यही बात बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे, दस द्वारों पार कर जाने के पश्चात आगे बाबा सावन सिंह जो सुन्दर पगड़ी और दाढ़ी वाले या फकीर चन्द खड़ा धोखाहै। गृहस्थी अगर ऐसा समझते हैं तो ये इतना

है जो इन गृहस्थों को दिया गयाजिस का कोई हिसाब नहीं। सच्चाई उनको ब्यान नहीं की गई। मैं क्या समझता हूं ? मेरी जो असली मैं है उसकी जो देह है वो प्रकाश है रोशनी है नूर है, सावित्री है। प्रत्येक मज़हब वाले आम तौर पर प्रकाश का साधन बताते हैं मगर जिनकी बुद्धि विकसित नहीं होती और कामी है उनकी समझ में इस बात का आना मुशकिल है। कामो का अर्थ केवल स्त्री भोग से मेरा मतलब नहीं है वो तो काम का स्थूल रूप है। अज्ञान से दुनियां की चीज़ों के लिये ज्यादा आशा करनी ये भी काम है :—

काम काम सब कोई कहे, काम न चीन्हे कोए
जेती मन क ल्पना, काम कहावे सोय।

तो सत मत कालक्ष्य स्थान क्या है ? इस बात का ज्ञान हासिल करना कि हम कौन हैं। अज्ञान का परदा कैसे मिटेगा ? एक तो सत्संग से। सत्संग में जाकर जो किसी सत् पुरुष के सत्संग को ध्यान से सुनता है उसको लाभ पहुंचता है। दूसरे अपने आपको देह और मन की लहरों से अलग करके, इन को छोड़ कर आगे चला जाना जाग्रत

अवस्था में जो विचार पैदा होते हैं मैं उनमें फंसता नहीं। बस इतनी ही बात है। अब में अपने साधन में मन को छोड़ जाता हूं। मगर किसी समय ऐसा होता है कि लाख कोशिश करता हूं सुरत मेरी भी नहीं चढ़ती। इस आयु में भी कभी-कभी कोशिश करने पर भी मुझे ये सुसरा मन नहीं छोड़ता। आगे है प्रकाश नूर, सनातन में इसको सावित्री कहते हैं। प्राणायाम मन्त्र में क्या है ?

ओम् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गोदेवस्य धी महि धियो योनः प्रचोदयात्।

सन्तों के मार्ग में गुरु भक्ति है। सन्त ईश्वर परमेश्वर ब्रह्म को मानते हैं मगर उनको वो मोक्ष देने वाला कहते। ईश्वर तो एक कानून है, वो एक law है। उसकी इबादत करने से तुम्हें एक प्रकार की शांति मिलेगी, सहारा मिलेगा। ईश्वर भक्ति मुबारिक है दुनियांदारों के लिये इशवर भक्ति करने वालों को सब कुछ मिल सकता है। मगर ईश्वर भक्ति करने वाले जन्म मरण से नहीं बच सकते, निर्वाण व आवागवन से छुटकारा नहीं पा सकते, क्यों ? क्योंकि उनका जो self है वो

किसी दूसरी चीज़ के साथ बन्धा हुआ है। इसलिये मरती दफा जिसको कोई गुरु या राम या कृष्ण लेने के लिये आते हैं वो आवागवन से बच नहीं सकता। संतमत वाले गुरु को मोक्ष देने वाले कहते हैं। वो कैसे ? गुरु ज्ञान से इन्सान तरता है शर्त ये है कि जिस तरह आप आये हैं मैंने आपको साबित कर दिया कि जब तक आदमी अपने ख्याल को नहीं छोड़ता, उसको ये ज्ञान नहीं है कि ये मन के अन्दर मेरी जो फुरना फुरती है ये दरअसल हैं नहीं, ये फरजी हैं, माया है, वो मन्जल पर पहुंच नहीं सकता। दुनियां की चीज़ों में न फंसना और अपने आपका ज्ञान रखना ही निर्वाण और सब मजहबों का मतों का और सन्तों का यही मकसद है। जो आदमी इस ज़िन्दगी में जीवन्मुक्त नहीं हुआ मरने के बाद नहीं जा सकता, जिस प्रकार हम स्वप्न देखते हैं इसी प्रकार मरने के बाद जीवन एक लम्बा स्वप्न है। कबीर साहब का एक शब्द है :—

जीवन मुकत सोई मुकता।
जब लग जीवन मुकता नांहीं,
तब लग दुख सुख भुगता हो।
देह संग ना होवे मुकता,

मोए मुकती कहां होई हो।
तीर्थ बासी होवे ना मुकता,
मुक्ति न धरनी सोई हो।
जीवत भरम की फांस न काटी,
मोये मुक्ति की आसा हो।
जल प्यासा जैसे नर कोई,
सुपने फिरे प्यासा हो।
होय अतीत बन्धन ते छूटे,
जहीं इच्छा वहीं जाई हो।
बिना अतीत सदा बन्धन में,
कितहूं जान न पाई हो।
आवा गबन से गये छूट,
ले सुमरण नाम अबनाशी हो।
कहे कबीर सोई जन गुरु है,
काटी भरम की फांसी हो॥

आप लोगों में से जो परमार्थ के ख्याल से आये हैं वो ये ख्याल ले जावें कि अगर इस जीवन में तुमको ये यकीन हो गया है कि मेरा मन जो है ये माया है, कल्पित है, असल में कुछ नहीं। ये ज्ञान जो परिपक्व हो जाये उसने लाख पाप किए हैं इस दुनियां में, उसको पापों की सजा नहीं मिलेगी। क्यों नहीं मिलेगी? एक देश में दोष करके जो दूसरे देश में भाग जाता है तो दूसरे देश वाले सजा नहीं देते। इसी प्रकार हमारा

शरीर और मन है। जो आदमी शरीर मन को छोड़ जाता है और फिर उसके आगे जो चीज़ हैं उसके साथ लगाव रखता है उसको पाप कैसा। लोगों ने नाम का अर्थ नहीं समझा। वो यही सयझते हैं कि पांच नाम का सुमिरण करो या राधास्वामी नाम का सुमिरण करो। करो। ये सुमिरण ध्यान तो इसलिये कराया जाता है कि तुम्हारा मन स्थिर हो जावे और फिर तुम बात को समझने के योग्य हो जाओ। तो मुख्य चीज़ जो है वो क्या है ? वो गुरु ज्ञान है और इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिये दाता दयाल लिखते हैं—

विद्या अविद्या वस्तु क्या,
जन्म मरन क्यों होय।
ईश जीव सम्बन्ध क्या,
समझे क्यों कर कोय।
भली भाँति ये मरम समझा देना ॥

मैंने अपनी रहनी सच्ची आपको बता दी। तो हम कौन हैं ? मैंने क्या समझा ? जब से मुझे मन के रूप का अनुभव हुआ तो अब मैं साधन में मन को छोड़कर ऊपर चला जाता हूं।

किसी समय ऐसा होता है. लाख कोशिश करने पर भी ये मन छुटता नहीं। कई बार ऐसे हालात मेरे पैदा हो जाते हैं कि कोशिश करने पर भी मैं वहां नहीं ठहर सकता, न जा सकता हूं। इसकी वजह क्या है? बाहर के प्रभाब। बाहर में लड़का बीमार हो गया, बाप बीमार हो गया, या कुछ हो गया या किसी से झगड़ा हो गया, बाहर के प्रभाव जो हैं फिर मुझे ऊपर नहीं जाने देते। इस बास्ते जिस इन्सान को ये ज्ञान हो जाता है उसको फिर किसी अभ्यास की ज़रूरत नहीं होती। अन्तर दृष्टि हो जाये, सुरत शब्द का मतलब क्या है? दुनियां ने केवल नाम-नाम शब्द-शब्द समझा हुआ है। स्वामी जी कह गये—

सुरत शब्द दौ अनुभव रूपा,
तु तो पड़ा भरम के कूपा।

वो कहते हैं, कि तू सुरत शब्द योग के पीछे पड़ा है। इससे मिलता क्या है? आदमी को अनुभव हो जाता है। अनुभव ही आखिरी मंजिल है। मरने के पश्चात क्या होगा? कहां जाऊंगा? थ्योरी है मेरे पास मगर मैं निश्चित रूप में कोई

बात नहीं कह सकता। मैं चाहता हूं कि जब शरीर से बाहर निकलूं तो बता सकूं दुनियां को कि मेरा क्या अन्त हुआ ? पता नहीं मेरी ये इच्छा पूरी होती है या नहीं होती। उस प्रभु की लीला का किसी को पता नहीं लगा। ये बात सच्ची कह रहा हूं।

न स्वामी जी को, न गुरु नानक को, न दाता दयाल को, न मुझ को, न ऋषियों को। अन्त में सब बेअन्त कह गये। आप ढूंढते ढंढते गुम हो गये। जुज़ कुल में मिल गया वो क्या कहे कि कहां गया। मेरे साथ यही बीती है। मन से आगे है शब्द और प्रकाश, प्रकाश और शब्द में उस चीज़ की तलाश करता रहता हूं जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। कभी कभी मेरे अन्तर वो अवस्था पैदा होती है वो भी एक दो मिन्ट के लिये, इससे ज्यादा वहां पर ठहर नहीं सकता। तो इससे मैं किस नतीजे पर पहुंचा ? कि जो असल में मैं है वो चीज़ जो मेरे अन्तर है वो न देह है न मन है, न प्रकाश है और न वो शब्द है, वो क्या है ? बस गूंगे का गुड़ है। कोई कुछ कह नहीं सकता। वो क्या है क्या नहीं ?

अगर में ये कहूं कि मैं वहाँ पहुंच के कुछ कर सकता हूं, फरज करो मैं न सही, और बड़े गुरु और सन्त कुछ कर सकते होते तो अपने ही कर्मों को काट देते, आप क्यों बीमार होते बुरी मौत क्यों मरते, उनकी इन दुखों में मन की क्या हालत थी ये मैं नहीं कह सकता । शायद वो दुखों को महसूस न करते हों । मगर दुख तो आया । मुझे एक वहम आ गया है कि इन महात्माओं और गुरुओं को क्यों दुख हुआ ? क्योंकि उन्होंने पब्लिक के साथ अधिकार ब संस्कार को देख कर या अपने डेरे और अपने धाम को देखकर साफ ब्यानी नहीं की या वे खुद जानते नहीं थे, अगर वो जानते नहीं थे, और वो गुरुवाई करते थे, वो सबसे अधिक दोषी थे । जिस चीज़ का तुम्हारे पास ज्ञान है ही नहीं, तुम गुरु बनकर बैठ गये, लोगों से धन ईकट्ठा करते रहे, अपने बाल बच्चों को दे गये, गद्दियां बना गये और फिर उन गद्दियों के पीछे लड़ाईयां हुई, अदालतो में जायदाद के लिये जाते हैं, ये दुनियां है क्या ? कुछ नहीं रुहानीयत की आड़ लेकर,मजहब के नाम पर दौलत और इज्जत मान कमाना दोष हैं,तो मैं गुरु मत का खण्डन नहीं करना चाहता,गुरुआइ का तो

खण्डन हो ही नहीं सकता, गलत गुरुआई का खण्डन करता हूं, जो गुरु चार सो बीस करें कि हां, तुम नाम ले जाओ हम अन्त समय तुम्हें ले जावेंगे। लोग मरते हैं, जैसा जिसका भाव होता है वो आ जाता है, तो मैं ने बता दिया हम कहां से आये हैं। हमारा असली घर हमारी वो हालत है जो कबीर साहब कहते हैं।

हम वासी उस देश के, जहां सत पुरुष की आन
दुख सुख कोई व्यापे नहीं, सब दिन एक समान
पांच तत्व गुणतीन के, आगे मुक्ति मुकाम
तहां कबीरा घर किया, जहां गोरख दत्त न राम
सुर नर मुनी देवता, ब्रह्मा विशनू महेश।
ऊंचा महल कबीर का, पार न पावे शेष॥

वो ऊंचा मार्ग क्या हुआ ? स्थूल देह के बोधमान को और मन के बोधमान को छोड़ जाना। कहते हैं जहां सत् पुरुष की आन। वो सत पुरुष क्या है ? मैं जो समझता हूं वो है रोशनी और शब्द का मण्डल। यही सत पुरुष है। उसमें क्या हो ता है ? सुखमनी साहब में लिखा है—

सत पुरुष जिन विवेक्या सत गुरु तिस का नाम।
ताके संग शिष्य उभरे, नानक हरी गुण गाम॥

ऐसे पुरुष के साथ जो शिष्य लगा हुआ होता हैं वो उभरता है यानी आगे जा सकता है। और फिर आगे लिखा है।

जीभ्या एक अस्तुति अनेक।
सत पुरुष है पूरण विवेक॥

एक ज़बान है, मगर अनेक प्रकार की स्तुतियां करती है। किसकी? जिसने सत् पुरुष का जान लिया है। अर्थात् सत् गुरु को (विवेक के अर्थ हैं ज्ञान समझ और अनुभव के) सत संग में जा कर अगर कोई तुम्हारे में ताकत हो सत् संग समझने की तो यह कोर्स दो चार या 6 महीने का है। पीछे से जीवन्मुक्त अवस्था आ जाती है।

परमार्थ ब्योहार क्या, क्या है इसमें भेद,
किस विध बरने ये विषय, शास्त्र सुमरती वेद।
जो तत्व हो उसे बता देना॥

मैंने तत्व जो समझा, हो सकता है वो ग़लत हो। जो Self है वो जब उससे जो कुछ निकलता है उसकी तरफ ध्यान जाता है वो जीव बन जाता है। मगर जब इस तरफ से वृत्ति हटा कर अपने आप में चला जाता हैं तो अपने निज रूप में चला जाता है। ये

कृति का नियम है। ये क्यों होता है ? जो चीज़ जीवन में है वो हरकत करेगी।

भरम जाल की फांस में, फंस पाया बहू दुख,
अब गुरु का संग मिला, मन पावे कुछ सुख।
राधा स्वामी निज पंथ लखा देना॥

असल राम तो ज्ञान है। जब ज्ञान हो जाता है फिर न कोई मरता है न जन्मता है। देह है ये चलती है टूट जाती है। self जो है अगर उसको ज्ञान हो गया तो जिस तरह बूंद समुद्र में मिल गई अपनी हस्ती खो गई, मैं ऐसा समझता हूं। अब तो दाता से ये प्रार्थना है कि तेरी दया का आसरा है। अब यही है कि अपने घर ले चल। बस जीवन से झगड़ा छूटे। बहुत देखी ज़िन्दगी, अब इसमें आसक्ति नहीं रही। चाह नहीं रही बिलकुल, मैं तो आशीर्वाद देता हूं आप लोग जिस ग़रज़ के लिये आये हो तुम्हारी ग़रज़ पूरी हो। मगर ये याद रख लेना कि जो कर्म तुम ने किये हुये हैं। उन के भोगने से तुम बच नही सकते। गुरु की संगत में जा कर ज्ञान हासिल करने पर दुख सुख तो तुम को आयेंगे मगर तुम उसकी परवाह नहीं करगो क्योंकी तुम को ज्ञान हैं। इस लिये मैं कहता हुं ऐ ईन्सान, तू बेशक

नाम ना जप । केवल कपनी नीयत ठीक रख । अपनी निजी गरज़ के लिये किसी से धोखा, फुरेब, चार सौ बीस, हेरा-फेरी मत करो । और जो करता है उसका नुकसान हो जाता है । हमेशा सदाचार और सच्चाई का जीवन अपनाओ, कहावत है :—

राहे रासत बरौ गस्बे दूर अस्त
ज़न बेवा मकुन गरचे हूर अस्त

इसका मतलब ये है कि सीधे रास्ते चल चाहे दूर का हो और जो विधवा है उसके साथ शादी मत कर चाहे वो कितनी ही सुन्दर क्यों न हो । सतसंग से लाभ क्या ? सत्संग के बिना समझ नहीं आती । मगर ये भी भगवान की कृपा होती है तब मिलता है । तो ये है परमार्थ, नानक कोटन में कोओ नारायण जिन चीत ।

गुरु की दया ये है कि दूसरे के भ्रम और संशय मिटा कर उसकी बुद्धि को निश्चल कर दे । इस वास्ते गुरु की ज़रूरत है । मगर गुरु वो है जिसको जीवन का तजुर्बा हो जो, मनोविज्ञान को जानता हो, केवल उस गुरु से लाभ पहुँच सकता है । हर एक मनुष्य के लिये एक कानून और एक तालीम नहीं है । गुरु हर आदमी की स्थितियां, परि-

स्थितियां, आर्थिक अवस्था और उसके सरकमटांसिज उसकी जेब और उसकी सेहत, सब कुछ देख कर तब हदायत करता हैं।

गुरु की दया यह है कि परमार्थ के लिये जो आसान तरीका हैं वो बता देता है। जिसको मैंने आजमाया है वो ये है कि जिस जगह तुम्हारा विश्वास बैठता हैं, उसका एक रूप बनाओ, क्योंकि बिना रूप बनाये तुम्हारा मन ठहर नहीं सकता। कोई आदमी चाहे कि मैं निराकार की उपासना करूँ ये नहीं हो सकता। एक रूप मान लो, जो रूप तुम्हारे अन्दर प्रगट होता हैं उस रूप को पूरा मानो। जिन आदमियों ने गुरु को इन्सान समझा वो सुखी नहीं रह सकते। आजकल क्या होता है ? हमारा गुरु अमुक साल पैदा हुआ, ये ये काम उसने किये, अमुक दिन मर गया। कबीर साहब कह गये—

गुरु को मानुष जानते ते नर कहिये अन्ध,
दुःखी होयें संसार में आगे जम का फन्द,
गुरु किया है देह को सत् गुरु चीन्हा नांह,
कहे कबीर ता दास को तीन लोक भरमॉ।

मुझे जरूरत थी उस घर जाने के लिये मगर मैं सनातनधर्मी था। उस राम को कृष्ण को पूजता था जिस ले दुनियां बनाई है। मेरा भाग्य अथवा

दुर्भाग्य उस जगह ले गया जहां ये कहते हैं इस दुनियां के पैदा करने वाला ज़ालिम है। कौन ऐसा हिन्दू है जो राम की या कृष्ण की बदनामी सहे गो हम राम को नहीं जानते हैं मगर जिस खानदान में हम पैदा हुए हैं वहां की टेक तो रहती है। एक ब्राह्मण के लिये ये शब्द सुनने कि दुनियां के पैदा करने वाला ज़ालिम है, निर्दयी है, कितना मुशकल काम है। इस वास्ते अब तो क्योंकि राधास्वामी मत या सँतमत ज्यादा हो गया है लोग बिरोध नहीं करते, नहीं तो लोग गाली निकाला करते थे और राधास्वामीमत वाले बन्द कमरे में बैठ कर बानी का पाठ किया करते थे क्योंकि दुनियां नुकताचीनी करती थी। क्योंकि मैंने सच्चाई के साथ जीवन गुज़ारा और गुरु आज्ञा वश इस समय में जिस सच्चे ज्ञान की ज़रूरत है जो मेरी समझ में आया बता देता हूं। इसलिये अपने आपको सत् गुरु वकत कहता हूं। तुम लोग आते हो साधन किया करो। अगर साधन नहीं बनता है तो जिस रूप को तुम गुरु मानते हो अपनी आत्मा से कभी उसे इन्सान मत समझो। लोग गुरु के असली रूप को नहीं समझते या उनको गुरु का असली रूप बताया नहीं जाता और सत्सँगी गुरु के शरीर से

ही चपके बैठे रहे। इस लिये ही ऐसी घटनाऐं हुई कि गुरु के चोला छाड़ने पर कई लोग आत्मघात कर जाते हैं। इसका जिम्मेदार कौन है ? वो गुर जिसने असलीयत नहीं समझाई। गुरु का असली रूप नहीं बताया और अपनी ही पूजा कराई। जो किसी गुरु का ध्यान करते हैं वे मन के दायरे में हैं।

निर्वान या जन्म मरण से उसको छुटकारा मिल सकता है जिस को इस जीवन में किसी चीज़ से राग नहीं, जो किसी चीज़ से बन्धा हुआ न हो। ये तालोम निवृत्ति मार्ग की है और बूढ़ों के लिए है। जवानों के लिये ये तालीम नहीं है। जवानों के लिऐ यह तालीम है कि अपने मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य को रखो,अपने जीवन को क्रियात्मक बनाओ। अपनी ज़ाती गरज़ के लिये किसी के विरुद्ध झूठी लांछन मत लगाओ और अपनी नीयत को साफ रखो। ऐ इन्सान, तू कुछ न कर अपनी नीयत को साफ रख। प्रवृत्ति मार्ग में सुख लेने के लिये अपने ख्याल को ठीक करो ; आशा रखो, उन्नति की ओर बढ़ो। दाता दयाल फरमाया करते थे पहले ब्रह्म बनो। उसका तजुर्वा कर लो फिर आना सन्तमत

की तरफ। ब्रह्म का अर्थ बढ़ना और मनन का अर्थ है सोचना। शारीरिक रूप में बढ़ो, धन कमाने के लिए बढ़ो और इज्जत हासिल करने के लिये बढ़ो। इस लिये मैं नाम ही नहीं देता किसी को। जैसा कोई मेरे पास आता है उसकी हालत प्रकृति अनुसार देख करके उसको इसलाह कर देता हूं। कई समझ जाते हैं और कामयाव हो जाते हैं। सम्मान मुझे मिल जाता है। मगर निवृत्ति मार्ग में जब तक इन्सान अपने अन्तर में शारीरिक और मानसिक बोधभानों को भूलेगा नहीं वो आगे नहीं जा सकता, आगे है शब्द और प्रकाश। उसमें जब जायेगा तो फिर वो इस पृथ्वी मंडल के अन्दर नहीं आयेगा मगर आवागवन उसका फिर भी समाप्त नहीं होगा। मगर वो आवागवन इस दुनियां का नहीं होगा, विश्नु लोक है, गन्धर्व लोक है, शिवलोक है, ऊपर में वहां जाकर वो अपनी जिन्दगी गुज़ारेगा। मैं अब ऊंचे सत्सँग दे रहा हूं क्योंकि मैं जानता हूं 93 साल की आयु हो गई है। एक दिन जाना है।

क्या पता कितने दिन और हूं। परमार्थ के बारे मैं ने बहुत कुछ समझा दिया। तुम से कुछ न हो, सके अगर तुम को केवल गुरु के ये बचन याद रहें कि तुम्हारे मन के अन्दर जो भी फुरना फुरती है या जो कुछ प्रगट होता है ये माया है,है नहीं,अगर ये गुरु ज्ञान

मिला हुआ है तो अभ्यास भी ज्यादा नहीं करना। दिमाग वाला हो और ज्ञान मिला हुआ हो, समझ मिली हुई हो, यकीन हो कि मेरे अन्तर जितने विचार उठते हैं कल्पित हैं, माया हैं। अगर मरते समय होश रह गई और यह बात याद रही तो फिर कहां जायेगा? जो फुरना उसके अन्दर फुरेगी वो तो आयेगी नहीं, प्रकाश के लौक में चले जायोगे तो जब मन को छोड़ जाओगे, तो मन में आकर तुमने लाख पाप किये हुए हैं, अच्छे या बुरे कर्म दोनों का नाश हो जायेगा। मगर जिस आदमी ने अपने ब्रह्मचर्य का ग़लत तरीके से प्रयोग करके खोया उसको इस अन्तिम अवस्था तक पहुंचना इस ज़िन्दगी में मेरे ख्याल में बहुत मुशकिल है। क्योंकि ये हालत ठीक विचार, मन की एकाग्रता से हासिल होती है। और ये तब ही हो सकती है जब वीर्य पुष्ट हो। मेरी रहनी अब आखिरी मंजिल की है और अब केवल सार शब्द को सुनसा हूं और अब मेरा मार्ग शरणागतम् है। दोस्तो, मैं ब्राह्मण का बच्चा हूं। अगर आज मुझे सन्तमत की ता.ीम में नुकस नज़र आता तो मैं आप को सच्च कहता हूं, चाहे मैं नर्क जाता, मैं दाता

दयाल के विरुद्ध भी कह जाता। बिल्कुल सच्ची बात कहता हूं। मगर आजकल यह गुरु हम को बताते क्या हैं ? कुछ भी नहीं। केवल अपने ही डेरों के लिये काम करते हैं और जिस चक्कर से संतमत निकालना चाहता था उसी चक्कर में डाल दिया है। पंथ को चलाने और डेरे बनाने के लिये और तालीम है।

विद्या अविद्या वस्तु क्या, जन्म मरन क्यों होय
ईश जीव सम्बन्ध क्या, समझे क्यों कर कोय
भलीभाँति यन मरम समझा देगा।

अब गृहस्थियों को अपने कर्म भोग वश ये कहना चाहता हूं कि जिस घर में सास बहू की, भाई भाई की, बाप बेटे की नहीं बनती, झगड़े रहते हैं, वहां कोई न कोई मुसीबत जरूर आयेगी। वहां सिवाय दुख और मुसीबत के और कुछ नहीं होगा और ऐसा ही होता है मैंने आज़माया है। अपने घरों में आज़माया है। सत्संगियों के घरों में आज़माया। इस वास्ते मैं गृहस्थियों को यह कहना चाहता हूं कि तुम वहां ऊपर जाना छोड़ दो, घर में शांति रखा करो। आज कल मंगलीक सन्तान अधिक पैदा होती है वो क्यों मंगलीक होते है ? स्त्री पुरुष यूं तो आपस में

मिलते हैं तो बच्चा पेट में आ जाता है। मगर उनके दिल नहीं मिले हुए होते वे उसकी सज़ा भुगतते हैं मैं जो कुछ कहता हूं बिलकुल सोलह आने सच्ची बात कहता हूं, मेरी बड़ी लड़की है ये मंगलीक थी। मैंने मंगलीक लड़का देखा, मगर उसको सुख नहीं था वो मेरे धर में रहती है। उसका जिम्मेदार कौन है ? मैं। मेरी जब दूसरी शादी हुई थी, जब मैंने उसका नाम सुना, मेरे दिल में ख्याल आया कि मेरी इसकी बनेगी नहीं हालांकि कभी कोई बात ऐसी हुई नहीं मगर मेरे दिल में वहम आ गया था। उस समय की मेरी जो सन्तान है वो मंगलीक निकली। ये वो राज़ है जो कोई बताता नहीं। अपनी अमली ज़िन्दगी को कोई नहीं बताता, बाद में मेरा ये वहम गुरु की दया से दूर हो गया ॥

विषय कम कमाओ, इश्वर का अगर कोई रूप है तो हमारे अन्तर तो उसका स्थूल रूप हमारा वीर्य है सूक्षम रूप उसका हमारी बासनाये और इच्छाऐ है और उसका कारण रूप ज्योती स्वरूप है। बस ईश्वर कोई हम से अलग तो है नहीं। सब जगह वही है। तुम्हारे अन्दर अगर कोई ईश्वर है तो ये

है जो मैंने तुमको बताया है। इस लिये मैं इस बात पर ज़ोर देता हूं कि विषय विकार कम करो कबीर साहब ने कहा है।

जहां नाम तहां काम नहीं, पहाँ काम वहां नाम नहीं।

घरों में बेटियो, शांति रखा करो, सन्तान को सन्तान के ख्याल से पैदा करो। हम क्या करते हैं ? हम तो अपने स्वाद के लिये स्त्री पुरुष मिलते हैं तो प्रकृति का कानून है बच्चा आ जाता है पेट में। फिर तुम ये उमीद रखो कि यै बच्चा तुम्हें या देश को कुछ लाभ देगा, नहीं देगा, नहीं देगा। ये है गुरुमत जिसको मैं कहता हूं।

मैंने यहां शिशु स्कूल खोला है। उसमें बच्चे के माता पिता को ये शप्थ पूर्वक लिख कर देना पड़ता है कि वो दो तीन से ज्यादा बच्चे पैदा नहीं करेंगे। अगर किये हों तो इससे ज्यादा नहीं करेंगे। अगर सरकार भी ऐसे ही कानून पास कर दे तो फैमीली पलानिंग तो आप ही हो गई। वो अपने आप कन्ट्रोल करेंगे या ओप्रेशन करायेंगे, वजाय इस के तुम उनको कहो।

सत्संग हजूर परमदयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

28-10-1979

बाबा अगम अगोचर कैसा, तातें कहि समझाऊं ऐसा
जो दीसे सो तो है नाहीं, है सो कहा न जाई ।
सैना बैना कहि समझाओं, गूँगे का गुड़ भाई ।।
दृष्टि न दीसे मष्टि न आवे, बिनसै नाहिं न्यारा ।
ऐसा ज्ञान कथा गुरु मेरे, पंडित करौ विचारा ।।
बिन देखे परतीति न आवे, कहे न कोउ पतियाना ।
समझ होय सब्दे चीनहे, अचरज हाय अयाना ।।
कोई ध्यावे निराकार को, कोई ध्यावे आकारा ।
वह तो इन दोऊ ते न्यारा, जाने जाननहारा ।।
काजी कथे कतेब कुराना, पँडित वेद पुराना ।
वह अच्छर तो लखा न जाई, मात्रा लगे न काना ।
नादी बादी पढ़ना गुनना, बहू चतुराई भीना ।
कहें कबीर सो पड़े न परलय, नाम भक्ति जिन-चीन्हा ।।

ये कबीर साहब की बानी है। जिनकी प्रकृति में उस सच्चे मालिक के मिलने की चाह है वे इस प्रकार की बानियों को पढ़ कर पागल होंगे ? मैं आप पागल हुआ रहा और अब भी मैं यह नहीं कहता कि मेरा पागलपना साफ हो गया, हां, जब से मुझे मन के रुप का अनुभव हो गया तो मैं मन से आगे चल जाता हूं। वहाँ क्या है ? प्रकाश है और शब्द है। फिर अगम देश और अलख देश को ढूँडने निकलता हूं। फिर आगे क्या है ? जीवन के बोधभान को छोड़ कर यानी देह को और मन को छोड़कर जो हमारे रूह के बोधमान है उनके खेलों का नाम अलख अगम है और अगोचर है। ये केवल एक ख्याल या हालत को दिखाने व ब्यान करने के लिए शब्द बनाये गए है, बानी बनाई गई है और हम लोग इस बानी में फंस कर मर गए। यही बात कबीर साहब किसी आदमी को कहते हैं।

बाबा अगम अगोचर कैसा तातें कह समझाऊं एसा।

कबीर साहब किसी अधिकारी को कहते हैं कि तू अगम और अगोचर के पीछे लगा हुआ है। वो क्या है ? कोई ब्यान नहीं कर सकता। किस तरह

से कोई उसको समझावे। इस वास्ते संतों ने उन आदमियों के लिये जो सच्चाई और हकीकत को जानना चाहते हैं ज़रूरी बात रखी है कि इन्सान किसी सत पुरुष के पास जाकर, इस भेद को समझे तब उसको शाँति हो जायेगी। तो वो मालिक जिस को अगम अगोचर कहते हैं न अपार है, न अनाम है और न अगोचर है। वो कबीर साहब बताते हैं वो कैसा है।

जौं दीसे सो तो है नाहीं, है तो कहा न जाई

क्या ये झूट है? अगर आज मुझे इन बानियों की समझ न मिलती, मैं आपको सच्च कहता हूं चाहे मैं नर्क में जाता, मैं इस कबीरमत और राधास्वामीमत की वो घज्जियां उड़ा के जाता कि इन मतों वाले याद रखते। मगर अब मजबूर हूं। तो वो जो कहा नहीं जाता वो क्या है? जो मेरे साथ बीती वो कहता हूँ। गुरु की दया और आप लोगों के अनुभवों से जब मुझे यकीन हो गया कि जो कुछ मेरे अन्दर प्रगट होता है या फुरता है ये माया है, मन है। तो जब मन को छोड़ कर आगे जाता हूं तो प्रकाश और शब्द है। प्रकाश को देखने और

शब्द को सुनने वाली कोई और चीज़ है। महीने दो महीने के बाद कभी ऐसी दशा आ जाती है कि वहां प्रकाश और शब्द दोनों समाप्त हो जाते हैं। वो जो बाकी रह जाती है हम उसको बता नहीं सकते। उसको हम क्या कहें कि वो क्या है। प्रत्येक मज़हब व फिरके वालों ने उसका अलग अलग नाम रखा हुआ है। समझाने बुझाने के लिये कहता हूं कि मैं जब वहां जाता हूं तो मेरी जो 'मैं' है ये ही समाप्त हो जाती है। तो फिर मैं क्या हूं क्या नहीं हूं या मालिक क्या है क्या नहीं। मैं आप हैरान हूं कि यह संतमत क्यों फैल गया बात तो कुछ बनी नहीं। मेरे ख्याल में इस भेद को इसी लिये खोला गया है कि खुदा के नाम पर जो इस समय सारी दुनियां बट चुकी है और एक दूसरे से घृणा, इर्ष्या और वैर है, झगड़े हैं, इस वहम को दूर करने के लिये संतमत आया था ताकि आपस में प्रेम और मेल से हमारा जीवन गुज़र सके। असल में क्या है, संतमत को क्यों आम फैलाया गया ? मुझे पता नहीं। क्योंकि वो जो असली चीज़ है उसको कोई ब्यान नहीं करता। मन का तो झगड़ा समाप्त कर दिया। जो कुछ मन सोचता है वो होता रहता है।

संसार के जीवन में मन तुम्हारी सहायता करने वाला है। अगर मन नहीं है तो तुम भी नहीं हो। मन न किसी ने मारा न ही कोई मार सकता है। जिस दिन मन मर गया तुम भी मर जाओगे। दिल ही काम करता है। जिस समय वो काम करना बन्द कर देगा तुम मर जाओगे। मन अगर सकल्प करना छोड़ दे तो मर जाओगे। फिर असली चीज़ क्या है ?

सैना बैना कह समझाऊं, गुँगे का गुड़ भाई।

कबीर साहब ठीक कहते हैं कि इशारा करता हूं। जिस ने समझ लिया खामोश हो गया। जब मैं वहां चला जाता हूं तो न मैं रहता हूं, न गुरु रहता है, न स्वामी रहता है, न प्रकाश रहता है। उन्होंने इशारा किया मैंने इशारे से कुछ ज्यादा शब्द प्रयोग किए मगर पूरी तरह कोई समझ नहीं सकता जब तक इन्सान आप अमल न करे। इस वास्ते ये करनी का विषय है। करनी के साथ सत्स'ग होना चाहिये। एक दफा तुम अपने जीवन में साक्षातकार कर लो फिर तुम्हें कोइ तकलीफ नहीं फिर तो जो कर्म चलता है वो तो प्रकृति का लेल

है। जो काम प्रकृति ने तुम से या मुझ से लेना है वो डन्डे मार के ले लेगी। आखिर दुनियां किसी गरज़ के लिये बनाई है। तुम भी यहां आये हो किसी गरज़ के लिये आये हो या अपने कर्म को भोगने के लिये आये हो या भगवान की सृष्टी के किसी कानून के आधीन तुम आये हो।

दृष्टी न दीसे मष्टि न आवे, विनसे नाहिं नयारा

वो जो अवस्था है, तुम अगर अमल से नहीं समझ सकते तो अकल से तो समझ लो या समझ सकते हो। वो जो असल चीज़ है वो न किसी की मुष्ट्ी में आ सकती है' न ध्यान में आ सकती है, न ब्यान में आ सकती है। न वो कैद हो सकती है, कुछ भी नहीं हो सकता। इस वास्ते कबीर का जो शब्द है वो विलकुल साफ है मगर जो इस अवस्था में जाना चाहते हैं वे क्यों जाना चाहते हैं। ये एक सवाल मेरे दिल में पैदा होता है। कुछ तो लोगों की बातें सुनी सुनाई काम करती हैं। और फिर ये तलाश आम तौर पर उनको होती है जिनको शारीरिक कमज़ोरी है। कल एक नौजवान आया, बड़ा सुन्दर चेहरा, बड़ी सुन्दर शकल। मेरी दो

किताबें उसके पास थी। कहने लगा मुझे 5 मिन्ट दीजिये। मैं ले गिया अन्दर कहो क्या कहते हो ? कहने लगा 6 साल हो गये अलग अलग मज़हब और फ़िरकों में फिरते हुए मगर मन को शांति नहीं मिलती। मैं क्या करूं ? इसलिए आपकी शरण में आया हूं। मैंने उसको देखा। मैंने कहा शादी हुई हुई है ? उसने जबाब दिया हां बाल बच्चे भी हैं।

मैंने कहा शादी से पहले तुम ने अपना ब्रह्मचर्य अपने हाथ से खोया है कि नहीं ? वह मान गया कि खोया है। मैंने कहा तो मैं शाँति नहीं दे सकता। अ आप समझ गये मेरी बात को मैं ने क्या कहा। जिन आदमियों ने अपने बचपन में ब्रह्मचर्य खोया है या जिन आदमियों ने ज्यादा बिषय कमाया है उनको वह मालिक जिसका ज़िकर किया है हासिल नहीं हो सकता, ये मेरा अपनी ज़िन्दगी का अनुभव है। उसको मैंने यही कहा कि कुछ दिनों बड़ का दूध खाओ। 6 महीने साल औरत के पास मत जाओ। तुम्हारा वीर्य ठीक हो जायेगा। फिर तुम किसी बात को समझने के योग्य बनोगे। ये है राज़ जो

किसी महात्मा ने साफ तौर से नहीं कहा, ये बिल्कुल सच्ची बात है। मैं जिस नौजवान को अधिक भक्ति करते देखता हूं फौरन समझता हूं कि Sex यानी काम अंग ने इसको खराब किया हुआ है। उनमें से एक मैं भी था। चोर डाकू को अगर थानेदार बना दिया जाये तो वो चोर डाकुओं को अच्छी तरह पकड़ सकता है। मैं क्योंकि पापी रहा हूं इसलिये मैं दूसरों की आदत को फौरन समझ जाता हूं। बारह साल बसरे बगदाद में रहा तब बच गया। घर में आया वो मेरी शांति सब चली गई क्योंकि मैं विषय विकार में फंस गया और फिर प्रार्थना करता था। तो यही आदेश मिला या मेरी आत्मा ने कहा कि भई, तुम में ये दोष है। फिर 26 साल मेरी औरत जीवित रही मगर मैं अलग रहा, प्रकृति ने शायद उसको बीमारी मेरे ही भले के लिये दी हो। आप समझ गये मेरी बात को। तुम अभ्यास करते हो अगर गुरु परायण होकर अभ्यास करोगे तो अभ्यास में लाभ होगा। अगर गुरु परायण नहीं बनोगे तो अभ्यास नुकसान करता है। गुरु परायण के अर्थ ये नहीं हैं कि तुमने फकीर चन्द को गुरु कर लिया। अपनी रहनी अपने हालात अपने बाक्यात

को गुरु के पास जाकर बताओ और फिर उससे हदायत लो तब तुम चल सकते हों वरना नही किताबों के पढ़े हुए क। नामदान समझ करके जो मरज़ी करो कुछ नहीं बनता। परमार्थ सीना ब सीना का विषय है। ये सत्संग पढ़ने या भाषण देने से नहीं मिलता। मैं क्यों ये काम करता हूं? ताकि इन्सान जो चाहते हैं वो किसी कामल इन्सान के के सत्संग में जाकर, उसकी बातों को सुनकर, अपने अनुभव के साथ मिलायें। फिर अपनी ज़िन्दगी को आप बनायें। करनी करो मगर करनी के साथ रहनी चाहिए। गुरु नाम के साथ जीवन के नियम या आवश्यक उपाय भी बताता है। सब के लिये एक नहीं होते। उन पर अमल करो। जब मैंने नाम लिया था तो मुझको चार उपदेश दिए गये थे। पहला ये था अपनी रोटी आप कमा के खाओ। रूखी मिले सूखी मिले आप कमा के खाओ। दूसरा ये था कि अपने मज़हब की बात किसी पर खाह मखाह मत थोपो, अपनी बात उसको न बताओ। अगर कोई पूछता है तो उतनी बताओ जितनी तुम्हारे तजुर्बे में आई है। किताबों में जो लिखा है

ये नहीं बताना बलकि जो बात तजुर्बे में आई है, तुमने आप लाभ उठाया है वो कहो दूसरों को, चौथी बात जो उन्होंने बताई थी। उसकी समझ उस समय नहीं आई थी। अब आती है वो ये थी कि रिशतेदारों को, अफसरों को, नौकरों को, बच्चों को, ये साबित कर दो कि तुम्हारा शरीर भी उनका है, तुम्हारा धन भी उनका है मगर तुम उनके मत बनो। बस यही कुंजी है। मुझे यह चार हुकम थे। मेरा भाई मया नाम ले आया। नाम दे दिया दाता दियाल नें और कहा जपना नहीं तुमने। बिलकुल नाम जपना नहीं है। क्या करना है ? उसके लिये हुकम था कि तेरे वास्ते जीवन का अर्थ काम और काम का अर्थ जीवन, 16 घन्टे काम करो, 2 घन्टे प्रात: सायं जीवन की ज़रूरतों के लिये, और 6 घन्टे सोने के लिये। पिछली अवस्था में मेरी गोद में आ जाओगे। वही बात हुई। दस कक्षा तक पढ़ा था, मैं पढ़ा न सका, फिर बाप ने उसकी शादी रखदी। मैं आगे ही करजदार था, दुखी होकर बसरे बगदाद चला गया और भाई को लिख दिया कि अगर मेरा बाई है तो अपनी कमाई आप करके अपनी शादी कर ले और मेरी औरत को यह हुकम

था, वो स्वामिमान वाली थो कि अगर तुम को कोइ एक ताना दे तो सोलह ताने गिन कर सुनायो चाहे फकीर चन्द भी क्यों न हो। क्यों ऐसा हुकम दिया? क्योंकि मैं लापरवा था दूसरे आदमी सब उसपर रोब डालते थे। नाम के साथ ये उपाय ज़रूरी होते हैं। एक मेरा गुरुभाई स्वामी गोबिन्द कौल था कशमीर में। वो 1931 में दाता दयाल के पास गया कि मुझे अपना चेला बना लो। कहने लगे एक शर्त पर। क्या? तुम ने मुझ से सारी ज़िन्दगी परमार्थ का सवाल नहीं करना। ये नहीं पूछना कि आत्मा क्या है, ये क्या है, वो क्या है, ये नहीं पूछना तुम ने और उसने नहीं पूछा। आप अभ्यास करता रहा, सत्संग में जाता रहा, स्वीटज़रलैंड के डाक्टर अँगरेज़ उस के चेले थे और कशमीर में भी पांच छः हज़ार उस के चेले थे। तो कबीर साहिब कहते हैं कि तूं जो टक्करें मारता फिरता है अगम क्या है, अलख क्या है, अनाम क्या है।

ऐसा ज्ञान कथा गुरू मेरे पँडित करो विचार

कबीर साहब कहते हैं मुझे ये गुरु ज्ञान मिला।

पता नहीं कबीर साहब को क्या ज्ञान मिला, स्वामी जी या दूसरे सन्तों को क्या ज्ञान मिला, जो ज्ञान मुझे मिला वो बता सकता हूं। अपनी रहनी जो उनके अन्दर बीतती है कोई गुरु नहीं बताता। बल्कि केवल अपने आपको बड़ा बनाने के लिये और मान प्रतिष्ठा के लिये बातें करते हैं। अब चूंकि मैंने तो आप सत्सँगियों की दया से देखा हुआ है और मेरा अनुभव है इस लिए मैं तो कहूंगा कि ऐ इन्सान, तेरी मदद करने वाली तेरी अपनी ही आत्मा है, तेरी अपनी ही वासना है। अगर तुम बदलना चाहते हो तो हालात वाक्यात तुम को बदल देंगे। अगर तुमहो नहीं चाहते तो कोई क्या करेगा। कोई गुरु कोई महात्मा कुछ नहीं कर सकता। कोई किसी की जिन्दगी नहीं बदल सकता। केवल जीवन बदलने का रास्ता बता सकता है या किसी अमली जिन्दगी वाले कामिल पुरुष के साथ प्रेम करो, मुहब्बत करो। ये ज़रूरी नहीं तुम उसको गुरु मानो। भाई मान लो, मित्र यार, चाचा ताया मान लो, जो मरज़ी है मान लो, ताकि उसकी सँगत से तुम्हारे जीवन में तबदीली आये। जब तक कोई आदमी आमिल नहीं है उसकी

ज़िन्दगी से दूसरों में तबदीली नहीं आ सकती, मगर ये किस के लिए तबदीली आयेगी ? जो अपने आपको बदलना चाहते हैं या अपनी ज़िन्दगी को बनाना चाहते हैं।

बिन देखे परतीति न आबे, कहे ना कोई पतियाना
समझ होय सब्दे चीन्हे. अचरज हाय अयाना

इन्सान को अपना जीवन बनाना चाहिये। राम राम करते हो तो राम के रूप को समझो नहीं तो आपस में पक्षपात बढेगा, झगड़ा होगा, एक दूसरे के विरुद्ध बोलोगे। अगर तुमने समझ लिया है तो बजाय इस के कि देवी को पूजो या फकीरचन्द या किसी भी गुरु को पूजो वो तुम्हारे मन की पूजा है। इसलिये चाहिए कि सुरत से शब्द को पकड़ो। मगर शब्द दो प्रकार के हैं, पहला तो ये है तुम सत्संग में बैठकर मेरी बानी को सुन रहे हो। एक शब्द तो गुरु का ये है। दूसरा शब्द तुम्हारे अन्तर गूंजता हैं। मगर वो हर एक आदमी को अहीं गूंजेगा। क्योंकि हमारा प्रेम दुनियां से है। कोई

जो काम करता है उसका अपना ज़ाती मतलब होता है। मतलब तो मुझे भी है मन्दिर का, मगर मेरा ज़ाती मतलब नहीं है। मैं तो इनको लिख कर दे चला हूं कि मेरे बाद कोई आदमी मेरें या मेरे पूर्वजों के खून का यहां का ट्रस्टी तक नहीं बन सकता :—

कोई ध्यावे निराकार को, कोई ध्यावै आकारा।
वह तो इन दोऊ से न्यारा, जानै जाननहारा।

सरगुण स्वरूप का प्यार क्या है ? राम कृष्ण देवी या किसी भी गुरु का जो इनका ध्यान करता रहता है वो सरगुण ध्यान है। और जो अपने ख्याल से कहते हैं कि बेअन्त है, ये है, वो है, रूप नहीं बनता, यूं ही सोचता रहता है, वो निरगुण है। इस वास्ते सन्तों ने सुरत शब्द योग निकाला है ताकि न तो तुम निराकार कहो, न तुम साकार कहो। क्योंकि जो साकार बना है ये तुम्हारें अपने मन ने बनाया है वो तुम्हारा अपना मन है। तुम निराकार को मानते हो वो भी तम्हारी अपनी बुद्धि है। अपनी अकल है। सरगुण उपासना और निरगुण उपासना दोनों को त्याग कर आगे

क्या है ? प्रकाश और शब्द । वो ईष्ट होना चाहिए और प्रकाश ही खुदा है जो दुनियां को पैदा करता है। इस वास्ते सन्तों ने इस मज़हब के झगड़ों को मिटाने के लिये सुरत शब्द योग की राह बताई है। मगर हम तो दुनियांदार बन के,दुनियां के झगड़े ही लिये आते हैं। मेरा पुत्र काम नहीं करता, मेरी लड़कियां व्याही नहीं गई। कई औरतें आती हैं मेरे पास बाबा जी, सात लड़कियां हैं मैं क्या करूं ? मैं कहता हूं जब लड़कियां पैदा की थी तो मेरे से पूछ कर पैदा की थी ? अब बताओ मैं क्या करू ? इतना भरोसा रख तूं अपने अहंकार से न सोच कि तेरी लड़कियां हैं। जो सेवा तेरे से हो सकती है कर वो तो मालिक की रूहें हैं जो उनमें आई हुई हैं अपना अपना कर्म भोग कर वो भी चली जाती हैं। इतना ख्याल रख कि ये तेरी लड़कियां नहीं हैं। सोचो इस बात को मैंने क्या कहा है आपको :—

काज़ी कथे कतेब कुराना, पँडित बेद पुराना
वो अच्छर तो लखा न जाई, मात्रा लगे न काना

हम क्या करते हैं ? पहली बादशाही ये कहती है, अँजील ये कहती है, गाता ये कहती है, यही कुछ

सत्सँगों में आप सुनते हो। अपना अनुभव तो कोई ब्यान नहीं करता कि मेरे साथ क्या बीती। किताबों का हवाला देते हैं। भारतवर्ष में फकीरों में पहला फकीर मैं हूं जिस ने इस सच्चाई को पब्लिक में खोला है ताकि जिसको गरज़ हो वो बात को समझ के अपने आपको बना ले। जिसको गरज़ न हो न बनाये। मैं ने आप को बोला कि जब कभी एसी समाधि लगती है कि मैं प्रकाश और शब्द को छोड़ जाता हूं तो वो जो चीज़ है वो तो लखी नहीं जातो। प्रकाश तो लखा जा सकता है। शब्द सुना जा सकता है। मगर वो जो सुनने वाली चीज़ है उसका कोई नहीं जान सकता। न कोई मात्रा लगती है। न कोई ज़ुबान में आता है। वो तो अपने आपको आप समझे व उस स्थान पर लै जाने की ज़रूरत है।

नादी बादी पढ़ना गुनना, वहू चतुराई भीना
कहें कबीर सो पड़ै न परलय, नाम भक्ति जिन चीन्हा

भाषण देने या सुरत शब्द योग के समबन्ध में ही बातें करनी, वो कहते हैं कि पढ़ना गुनना गाना आदि जो कुछ है इस से वो चीज़ नहीं मिलती।

नाम भक्ति जिसनें नहीं समझी वो इस चक्कर से नहीं निकल सकता। वो नाम कौनसा है ? केवल सुरत से सुना जाता है। कई नाम ऐसे हैं, घन्टा शँख है, मरदँग है, रारँकार है, सोहँगकार है, ये सब हम मन से सुनते रहते हैं। मन साथ होता है। जिस प्रकार की हमारी प्रकृति है। हम अपनी प्रकृति के अनुसार सुनते हैं। जो किताबों में लिखा हुआ है वो सब पर नहीं धटता। अभ्यास क्या है ? अभी का अर्थ पहले, आस के अर्थ होना। जो चीज़ हमारे दिमाग में पहले ही कुदरत ने दी हुई है उसको जानना, उसका साक्षातकार करना ही अभ्यास है। और कोई अभ्यास नहीं। क्योंकि मन चंचल है, ठहरता नहीं, इस वास्ते सुमिरण ध्यान दिया हैं। ये श्रेनियां हैं पहाड़े हैं। सुमिरण ध्यान ज़रूरी है मगर सुमिरण ध्यान का जो फल है वो किसी को पता नहीं। सुमिरण ध्यान के बाद शब्द आता है और शब्द के पश्चात किसी कामिल गुरु का सत्संग है। सब से बढ़ कर सत्संग है। न कोई यहां हिन्दू है, न मुसलमान हैं न इसाई न सिख है हम सब इन्सान हैं। एक परमतत्व आधार हैं। उससे हम निकल कर आये हैं। हम सब कोई 30 साल के

लिये आते हैं, कोई पचास वर्ष के लिए आते मैं कोई 80 वर्ष के लिये आते हैं। अपना कर्मभोग भोगते हैं या जो उस काल भगवान का काम है वो कर जाते हैं और वापस चले जाते हैं। ये है जीवन का सारा खेल। कई मातायें मेरे पास आती हैं। कहती हैं मेरा पुत्र कहा नहीं मानता, ये नहीं करता। मैं हँसता हूं। इन को कहता हूं तुम बताओ तुम जब पती पतनी मिले थे औलाद की खातिर मिले थे ? वो जो औलाद है खुदरौ औलाद है। बिना ज़रूरत बिन चाहे बच्चे पैदा होते हैं। अब उस औलाद से क्या ये आशा करते हो वो मां बाप की सेवा करेगी या भली बनेगी ? तुम उन से कभी ये आशा मत रखो। तुम्सारे मन में बड़ी भारी ताकत है। औलाद अच्छी पैदा करो, बस अच्छी औलाद ही गृहस्थ के लिये सब से बड़ी दौलत है।

राधास्वामी

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर ।

२२-८-१९८९

तुझे किस ने कहा कि वह पास नहीं,
वह तुझ में है वह काशी और कैलाश नहीं ।
ढूढत ढूंढत थक गये पता न देवे कोय ।
संतों के सत्संग में उसका दर्शन होय ।
यह समझ ले पृथ्वी आकाश नहीं ।। तुझे ... ...
घट में है सूझे नहीं, घट नहीं ढूंढे कोय ।
चारों धाम में थक गये, अपना आपा खोय ।
निगुरा क्या पावे वह दास नहीं ।। तुझे ।
सांस साँस में रम रहा, सब का रमता राम ।
आंख खुले दर्शन मिले, घट में जपे जब नाम ।
वह कर्म धर्म अभ्यास नहीं ।। तुझे ... ...
अपना आपा परख ले, सुरत शब्द की चाल ।
अपने आप में वह रहे, समझ के होत निहाल ।

उसे कैसे मिले जिसे आस नहीं। तुझे ... ...
राधास्वामी नाम ले, घट में बन्द लगाय।
तब तत छिन दर्शन मिले, भ्रान्ती भरम भुलाय।
वह तीरथ बरत उपवास नहीं ॥ तुझे ... ...

हम सब लोग बानियों को सुन सुन कर पागल हो जाते हैं। आप ही सोचो यह शब्द मैंने सुना। यह मेरे गुरु महाराज शिव ब्रत लाल जी महाराज की बानी है। मैं राम को मिलने निकला था। वह कहते हैं कि तुम को किसने कहा वह पास नहीं है। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि वो मेरे पास है या कि नहीं ? अगर वह मेरे पास है तो वह क्या है ? और अगर मैंने उसको अपने पास नहीं देखा तो मैं ये जो काम करता हूं ये सारा बकवास है। झूठ बोलता हूं, आप से पाखंड करता हूं। वह चीज़ क्या है जो हमारे पास है। इसका पता मुझे आप लोगों से लगा। मन माया के सूक्षम रूप को समझ कर मन को छोड़ जाने लगा। बस केवल इस एक ख्याल से कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता, लोगों के अन्दर मेरा रूप प्रगट होता है, मैं तो जाता नहीं, अगर वह यह कहें कि मेरे अन्तर बाबा फकीर रहता है तो वह अज्ञानी हैं। वह तो उनके अपने ही

मन का विश्वास है ,अपना ही ख्याल है जो उन्होने माना कि बाबा फकीर चन्द या कोइ उस का गुरु उस के अन्दर रूप में आ जाता है। ये राज़ है। मगर इस भेद तक प्रत्येक आदमी पहुंच नहीं सकता। क्यो' ? कयोंकि मन के ऊपर दुनियां की आशायें, दुनियां की चाह है। मन का चक्कर, मन का बोझ ये हमारे सर पर मौजूद रहता है। वह असली रूप को, जो असली खुदा है, उसको देखने के लिए रुकावट है। हम देख नहीं सकते। वह असली खुदा क्या है ? मुझे नहीं पता जो मैंने समझा वह ठीक है या ग़लत है। जब से तुम लोगों से सुना कि मैं तुम्हारे अन्तर जाता हूं तो मझे विश्वास हो गया कि मेरे अन्तर जो रूप दाता दयाल, राम या जो कुछ भी प्रगट होता था या जो कुछ मैं देखता था असलीयत में वो नहीं था। वह मेरा अपना विश्बास था, मेरा अपना ही ख्याल और अपना ही कर्म था। ये है भेद मगर यहां तक पहुचने के लिये सब से पहली चीज़ क्या है ? मैं बताया करता हूं (Control over mind)। जिस आदमी का अपने ऊपर काबू नहीं है वो इस रास्ते पर आने के योग्य नहीं है। उसका मन चंचल रहेगा वह तो दुनियां के पीछे

फिरेगा। अब यह माई है। ये गुरु को फकीर चन्द समझती है। इसको यह पता नहीं, कि फकीर चन्द और है। फकीर चन्द गुरु नहीं। गुरु तो अपना ही आत्मा है। हम ने अपने ही मन से किसी को माना हुआ है कि वह मेरा गुरु है। जैसा ख्याल वैसा हाल, तो वो क्या चीज है जो हम को उस असली सच्चे घर पहुंचने के बीच में रुकावटें डालती है पहली रुकावट तो यह है कि हमारा शरीर बीमार रहता है। जिसका शरीर बीमार है उसका मन भी बीमार है। कुछ समय ज्ञान होने के पश्चात अगर शरीर बीमार हो जाये तो वह शायद दुख न मनायेगा। मगर अगर ज्ञान होने से पहले शरीर को दुख हो संत हो, साधु हो, महात्मा हो, परमात्मा हो, कोई भी हो, वह कभी भी दुखों से बच नहीं सकता, इसलिए मैंने आवाज दी है कि बजाय रुहानियत के पहले इन्सान बनो।

गुरु पशु, तिरया पशु, वेद पशु, नर पशु संसार
मानुष ताहे जानिये, जा में विवेक विचार

वह विवेक विचार यह है कि हमारा जो मन है उसमें बड़ी ताकत है। जैसा हम ख्याल करेंग जैसा

हम सोचेंगे वैसा होगा। इस वास्ते हमारे मुनियों ने धर्म और कानून बनाये हुए थे। औरत की मरद के प्रति और मरद की बीबी के प्रति क्या डयूटी है। बाप का लड़के के प्रति और लड़के का बाप के प्रति क्या फर्ज़ है, प्रजा का राजे के प्रति और राजा का प्रजा के प्रति क्या फर्ज़ है। यह सब कानून इसी लिये बनाये गये थे कि आदमी इन कानूनों पर रहते हुए अपने मन के ख्यालात को ठीक रखे। मगर वो तो रहा नहीं। क्यों? क्योंकि अदब (शिष्टाचार) तो रहा नहीं।

तो दुनियां में मन को काबू करने के लिए सब से पहला तरीका ये है कि हम एक दूसरे का अदब करें। लड़का मां बाप का अदब करे, बाप लड़के क भी अदब करे। यही नहीं कि लड़का ही बाप क अदब करे, बाप लड़के का भी अदब करे। जब आदमी लड़के लड़कियों वाला हो जाता है फिर वह अपने लड़के लड़कियों के सामने कोई ऐसी वैसी अशिष्ट बात नहीं कर सकता। उनके सामने अनुचित बात न करना ही तो लड़के लड़कियों का अदब है तुम सोचो क्या कहा मैंने। तो अदब सब से पहली चीज है। मगर हम लोग अदब नहीं करते। इस फल स्वरूप हम दुख उठाते हैं। घर में औरत प

की इज्ज़त नहीं करती कटु बचन बोलती है, मरद औरत की इज्ज़त नहीं करता दुर्बचन बोलता है बाप लड़के की इज्ज़त नहीं करता अनुचित बचन बोलता है, लड़का बाप को बुरा भला बोलता है तो फिर अगर हम संसार में दुखी न हों तो और कौन हो। ख्याल की ताकत को देखता हुआ मैं ये निर्भय होकर कहता हूं कि कौन हम को बचायेगा ? सोचने की बात करो। जिस जाति में यां जिस देश में जिस घर में अदब नहीं है वो तबाह हो जावेंगे। जिस घर में बड़ों की इज्ज़त नहीं है वह घर बरबाद हो जायेगा, अशांति होगी और तकलीफें आयेंगी। जहां जहां औरत मरद का झगड़ा होता है, घर में लड़ाई रहती है वहां सुख कभी नहीं, कोई न कोई मुसीबत सिर पर आयेगी, वो बच नहीं सकते। मैंने इस चीज़ की जांच की है इसलिये कहता हूं। परसों भी एक सज्जन मेरे सामने आया था। उसका घर बरबाद हो गया। मालूम हुआ कि उसके घर में झगड़ा रहता था। जिस प्रकार तुम अपने घर वाल बच्चों के साथ रहते हो उनका पालन पोषण करते हो वह तुम्हारा गृहस्थ है। इसी प्रकार यह देश भी एक प्रकार का गृहस्थ है। जिस प्रकार घर में अदब के न रहने से घर

तबाह हो जाता है इसी तरह देश में राष्ट्रपती और बड़े बड़े आफीसरों का अदब न रहने से हम कभी यह आशा नहीं कर सकते कि हम सुख और शाँति से गुज़ारा कर सकते हैं। कभी नहीं कर सकते। चूँकि मेरे जिम्मे दाता दयाल ने जगत कल्याण की ड्यूटी लगाई है इसलिए मैं दुनियादारों और राजनीतिक दलों को ये बड़े दरदे दिल से रहा हूं।

तुम लाख राम राम करते रहो, नाम जपते रहो, अगर तुम्हारे दिल साफ नहीं हैं तो तुम अपने कर्म के फल से बच नहीं सकते। बस एक बात आपको बताये देता हूं। कोई आदमी जिस में पहले इन्सानियत नहीं आयेगी, मन से शुद्ध व्यवहार नहीं करेगा, उस में रुहानियत नहीं आयेगी। रुहानियत हैं क्या बला? दुनियां ने उसको समझा नहीं। रुहानियत है क्या चीज़? रुह तो हर समय तुम्हारे अन्दर है। रुह के अन्दर से आनन्द निकलता है, खुशी निकलती है। जो हर समय परसन्न चित रहता है वह रुहानी आदमी है और वह खुश तभी रहेगा जब उसका मन काबू में आ जायेगा। मन को काबू तब कर सकेगा जब एक तो उसका स्वस्थ्य

ठीक रहेगा। कई बीमार मेरे पास आते हैं। उन के दिमाग़ ठीक नहीं होते। वो दुख उठायेंगे। अनुचित तरीके से घर का कारोबार करेंगे, जो गृहस्थि अपने सांसारिक जीवन में अपनी आय से अधिक खर्च करता है वह कभी सुखी नहीं रह सकता।

तुझे किस ने कहा वह पास नहीं।
वह तुझ में है काशी कैलाश नहीं।

वह हर एक में है। तुम सब में वो चीज़ मौजूद है। मगर कौन सी चीज़ है जो उसके दर्शन नहीं करने देती ? विषय विकार का जीवन, घरों में अशांति और संसार के दुख। और ये क्यों होते हैं ? क्योंकि हमारे हां अदब नहीं है। एक आदमी यहां आया हुआ है। वह लड़के की शिकायत करता है कि लड़का कहा नहीं मानता, आमदन नहीं है। पैसा नहीं है। प्रथम तो मैं यह पूछता हूं कि उस बूढ़े बाप का हक़ क्या है कि लड़के को कहे रोटी दे खाने को ? क्या हक है उसका। क्या उसने सन्तान को सन्तान के ख्याल से पैदा किया है। वह तो खुदरो औलाद पैदा हो गई। अपने स्वाद के लिए आदमी औरत के

पास गया, बच्चा पेट में आ गया। अब तुम उसके ऊपर ये हक जताओ कि वह तुम्हारी सेवा करे। क्यों? क्या तुम ने उसे सन्तान के ख्याल से पैदा किया था? इसी लिए ये सब जितने बूढ़े २ आदमी हैं ये सब दुख उठाते हैं। कोई नसीब वाला आदमी ही है जिसको ये शिकायत नहीं है कि मेरी सन्तान खराब नहीं है :

तुझे किस ने कहा वह पास नहीं।
वो तुझ में है काशी कैलाश नहीं।

मुझ को खुद पता नहीं था, मैं दाता दयाल को ही समझता था कि यही राम है। उनकी पूजा किया करता था। ये काम जो मुझ को दिया गया था। केवल इस वास्ते दिया था कि मुझ को सच्चाई का पता लग जाये और सच्चाई का पता लग गया।

वह जो तत्व है, वो क्या चीज है? कहने को तो मैं कह देता हूं मगर किसी की समझ में नहीं आयेगा, जब तक उसका मन साफ नहीं है और वो मन से ऊपर नहीं जायेगा। आप लोग हैं, किसी को

औरत का फिकर हैं, किसी को लड़के का फिकर है, किसी को कुछ है, किसी को कुछ है। दुनियां के दुखों के मारे आते हैं और मैं उनके दुखड़े सुन कर खुद दुखी होता हूं। लोग घरों में दुखी होते हुए गुरुओं के पास जाते हैं,परमात्मा को याद करते हैं। परमार्थ तो वहम है। परमार्थ के लिए कौन जाता हैं, और कौन आता है, न कोई आता है न कोई जाता है। ये क्यों होता है ? क्योंकि सन्तान को सन्तान के ख्याल से पैदा नहीं किया जाता। मैं तो केवल अपने कर्म भोग वश, गुरु की आज्ञा पालन करने के सिलसले मैं इतना कह देता हूं कि जो कुछ है तुम्हारे मन में है। इस मन को साफ करना है। इसको साफ करने के लिए प्रत्येक आदमी के लिए एक ही तरीका नहीं है। जब तक कोई आदमी मन पर सवार नहीं है कोई आदमी वहां पहुंच नहीं सकता, चाहे वो मथ्थे टेके या टिके लगाये, मन्दिर में चला जाये, चाहे वो कितना पैसा दे दे :

ढूंढत ढूंढत थक गये पता न देवे कोय
सन्तों के सतसंग में, उसका दर्शन होय

संतां के सत्संग में बाजा बजा कर सत्संग कराना मना है। केवल पाठ ही करने का दसतूर है। क्योंकि बाजे से तबीयत अन्तर मुखी नहीं होती। इस वास्ते सन्त का जो बचन है वह मुख्य है। मैं भी हर समय संत नहीं रहता मगर समय समय पर सन्त अवस्था तारी होती रहती है। पिछले ज़माने में मेरी तरह साफ ब्यानी का दस्तूर नहीं था, केवल इशारा करते थे।

सैन बैन को जो लख, ताको कहिये धाय
जो सैन बैन को ना लखे, ताको कहे वलाय

वो सन्तमत की शिशु अवस्था थी यानी वह छोटे बच्चों की अवस्था थी। अब वो बड़ गया। किसी समय ये जवान होगा। फिर ये ख्यालात जो हैं ये सारे संसार में फैलेंगे और दुनियां में अमन आयेगा। संतमत संसार में केवल एकता और शांति के लिये आया है। ये मैंने समझा है। बाकी रह गया ये कि खुदा क्या है? खूब देखा, सारी उमर राम को खोजता२ मर गया, जब मैं अभ्यास में

रूप रंग रेखा यानी मन को छोड़ जाता हूं। यहां कोई संकल्प नहीं उठता, उसके आगे प्रकाश और शब्द है। प्रकाश और शब्द में रहता हुआ उस चीज़ की तलाश करता हूं जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। वो जो चीज़ है, वो है असली राम। वह मेरी या तुम्हारी अपनी ही ज़ात है। हम उसकी अंश हैं। वह ज़ात है। मुझे तो राम यह मिला। पिछले कर्म जो किये हुये हैं सब को भुगतने पड़ते हैं। मैंने कोई परदा नहीं रखा,सच्ची बात खोल कर बता दी। मगर दुनियां सच्चाई को सुनने के लिए तैयार ही नहीं। मेरे पास जितने आदमी आते हैं, सब दुनियाँ के दुखों के मारे आते हैं। अब इनको राम क्या दूँ ? जितनी मेरी समझ में आती है उतनी राय दे देता हूं। आप लोग आ जाते हैं, मैं अपनी आत्मा से पूछा करता हूं फकीर चन्द, तूं ने मकड़ी का जाला बना लिया, बता तूं किसी को कुछ दे सकता है? मेरे पास शुभ भावना है बस और कुछ नहीं। दूसरा आदमी अपने विश्वास, अपने प्रेम और अपनी श्रद्धा से ले जाता है या जो ज्ञान मैं ने सीखा है वो बता देता हूं। बस, सच्ची बात कह दी, और कहने की

कोई ज़रूरत नहीं ।

जो तुम्हारी कामना हो अपने दिल में रखो, ध्यान किया करो आपकी कामना पूरी होनी चाहिए। अगर नहीं होती और तुम सच्चे होकर पुकार करते हो, तो मेरा कसूर है आपका नहीं। इसका अर्थ यह है कि मैं पूरा नहीं हुआ या सन्त नहीं हुआ। सूरज और आग के सामने जाने से गरमी आती है या नहीं आती ? पानी के पास बैठने से ठन्डक आती है या नहीं आती ? औरत के पास बैठने से काम उत्पन्न होता है या नहीं होता ? तो संत के पास जाकर अगर आदमी को शांति नहीं मिलती या उसकी मनोकामना पूरी नहीं होती तो वह सन्त नहीं है । हम तो यह जानते हैं। मगर दूसरों के लिए नहीं। तुम अगर पुत्रों के लिये चाहते हो ये बात झूठी है। पुत्र नहीं चाहता तो उसको क्या मिलेगा, अपने वास्ते अपनी ज़ात के वास्ते सच्चे बन कर, सन्त कोई हो तो उसके दर्शन करो दिल में रखो वो पूरा हो जायेगा ।

सब को राधास्वामी

पत्र व्यवहार द्वारा ज्ञान

पत्र नं: 1

प्यारे भाई,

राधास्वामी ।

तुम नाम मांगते हो । जो पहले ही तुम्हारे पास हैं वो कौन देगा ? दुनियां ने सुना हुआ है कि गुरु देता है । किसी पूर्ण गुरु के सत्संग के बचन इन्सान के मन के भ्रम और शँकायें तोड़ कर उसको शांत पदवी देता हैं । मैं दूसरे गुरुओं की तरह जीवों को नाम नहीं देता । असली और सच्चा नाम तो इन्सान के मन, शरीर और प्रकाश से परे है । वो क्या है ? लोग कहते हैं कि वो शब्द है, ठीक है । शब्द का साधन केवल उस असली और सच्चे नाम को समझने और हर समय अपने पास होने का यकीन दिलाता हैं । क्योंकि इन्सान का मन चन्चल है, दुनियां की आशाओं में फंसा हुआ है, विषय विकार

का जीवन है, आर्थिक कठनाईयां हैं आदि आदि। इस लिए उसको सत्संग कराया जाता है। इन्सान क्या है इसको अकली तौर से समझने के लिए या खुदा को जानने के लिए ये सुमिरण, ध्यान और भजन है। ये जो सुमिरण ध्यान भजन बताया जाता हैं ये उस नाम तक पहुंचने या जानने या अपने आपको जानने का उपाय है। और साथ ही किसी निर्बन्ध पुरुष का सत्संग है। गुरु भक्ति गुरु की बाहरी भक्ति यानी देह की सेवा या भक्ति ये क ख ग हैं। तुमने लिखा नाम दे दो। पहले असली और सच्चे नाम को हासिल करने के लिए मानवता की ज़रूरत हैं। अपने मन से किसी का बुरा चाहना, किसी के अवगुण बताना, ज़ाती गरज़ के लिए किसी को बदनाम करना, घरों में शांति न रखना और नफ़रत और द्वेष पैदा करना इनसे आदमी को बचना चाहिए। क्योंकि मन चंचल हैं इस लिए वर्णात्मक नाम का सुमिरण अपने ख्याल के साथ दोनों आंखों के बीच जो जगह है वहां करना पड़ता है और खास खास नियमों के अनुसार जीवन गुज़ारना पड़ता हैं। मुझे वर्णात्मक नाम का सुमिरण दाता दियाल जी महाराज जी ने दिया था। इस लिए मैं प्रणाली को

तोड़ना नहीं चाहता। आप राधास्वमी नाम को मन में सुमिरन किया करो। ज़बान न हिले और खास कर साधन के समय घर बार, गृहस्थ या और चीज़ों का ख्याल न आने पाये। औरतें बच्चे पैदा करने के लिये होती हैं विषय बिकार के लिए नहीं स्त्री की इच्छा पर रहो। क्योंकि मैंने आपको देखा नहीं है जब मैं बसंत पर आऊंगा तो मिलना जो समझ में आया हिदायत करूंगा। गुरु स्वरूप का ध्यान किया करो, मगर उस रूप को जिस को तुम बनाओगे या प्रगट करोगे उसको फकीर चन्द या कोई और आदमी मत समझो। उसको पूर्ण मानो। तुम्हारा विश्वास तुम्हारा यकीन तुम्हारी जिन्दगी को बदलेगा, इस से आगे बताना उस समय तक जब तक कि मैं आप को देख न लूं, ठीक नहीं समझता। अगर सच्ची बात मुझ को पूछो तो मैं दूर हूं। श्री आनन्द राव (दयालानन्द जी) आप के इलाके में गुरुपने का काम करते हैं। उन से मिल कर हिदायत लो और जब मैं हन्मकोंडा आऊं बसंत पर तो मुझ को मिलना। मैं सच्चे दिल से चाहता हूं मालिक आपको सेहत, दौलत और मन को शांति

दे और ये चीज़ें सत्संग और सुमिरण, ध्यान भजन से अगर मालिक की दया है, तो मिल सकती है।

फकीर

★●★

शोक समाचार

पूज्य श्री मोहन लाल जोशी सा: उर्फ काका सा: पटवारी जी ब्यावर निवासी का शरीर 9-1-80 को ८५ वर्ष की अवस्था में छूट गया। वे राजस्थान के पुराने प्रेमी, सादगी पसन्द साधक थे। श्री परमदयाल जी महाराज और कृपाल जी महाराज के मार्गदर्शन में उन्होंने सुरत शब्द योग का साधन किया था साथ ही मानवता मंदिर के साहित्य के भी वे निष्काम प्रचारक थे। उनके चले जाने पर मानवता मंदिर उनकी आत्मा को शांति की इच्छा करता है।

पत्र नं 2

प्यारे भाई,

राधास्वामी !

बच्चा, जन्म धन्य होने का क्या भाव है ? जीवन का धन्य बनाना तुम्हारे अपने हाथ में है मेरे हाथ नहीं है। धन्य होना जीवन का मेरी दृष्टी में अच्छा स्वास्थ्य, अच्छी आर्थिक अवस्था, मन शांत और मान प्रतिष्ठा होनी चाहिए।

इस के लिये अधिक विषय भोगों में न फंसो, दुखियों की सहायता करो। ईज्ज़त चाहते हो तो दूसरों की भी इज्ज़त करो, जो मैंने समझा बता दिया।

एक धन्य वो होता है कि मनुष्य का दोबारा जन्म न हो। उसके लिए ज्ञान की ज़रूरत है। ज्ञान पाने के लिए वैराग्य की ज़रूरत है। वैराग्य बहुत ज़रूरी है। जिसको वैराग्य नहीं उसको ज्ञान भी नहीं और ज्ञान की प्राप्ति के लिए चित्त की वृतियां स्थिर होनो चाहियें। हमारे हां चित्त की वृतियाँ स्थिर करने के लिये सुमिरन, ध्यान और भजन है। तुम वास्तव में चाहते क्या हो, वह लिखो. गोल मोल लिखने से क्या फायदा। फकीर

तुम्हारी कहानी

लेखक :—श्री कुबेर नाथ
श्रीवास्तव ऐडवोकेट

पुराने ज़माने में एक बहुत शक्तिशाली राजा था। उसके राज का विस्तार बहुत लम्बा चौड़ा था। वह वेद शास्त्र और पुराण इत्यादि का ज्ञाता था। उसको अनुभव हुआ कि पुरुष के पाप की भागी स्त्री होती है और स्त्री के पाप का भागी पुरुष होता है। इस दृष्टिकोण से उसने अपने राज्य में यह नियम बनाया कि अगर पुरुष कोई अपराध करे और जिस काल तक उसको बन्दी होने का दण्ड दिया जाय और उसकी स्त्री भी अपने को उसके अपराध का भागी समझ कर बन्दी रहना स्वीकार करे तो उसके दन्ड की अवधि आधी हो जायेगी। उसने एक ऐसा बन्दी गृह बनाया जिसमें इसी प्रकार बन्दी रहें। संयोग बश एक मनुष्य ने कोई बड़ा अपराध किया जिसके कारण उसको 28 वर्ष का दण्ड हो गया। उसकी स्त्री ने उसके साथ बन्दी रहने का प्रार्थना पत्र दिया जिसको राजा ने स्वीकृत कर के दण्ड की अवधी आधी कर दी और पुरुष के साथ स्त्री को बन्दी बना कर बन्दीगृह में भेज दिया गया।

दण्ड को अवधी में उस बन्दीगृह में भेज दिया। दण्ड की अवधी में उसे वन्दीगृह में उनके संतान पैदा हुई। उनके संतान को यही ज्ञात होता था कि संसार की सीमा वन्दीगृह ही तक है और दण्ड भोगना ही उसका गुण है। वे इस कारण हर्ष पूर्वक जीवन व्यतीत करते थे। परन्तु उनके माता पिता दु:खी थे कि कब तक दण्ड की अवधी समाप्त होगी और हम लोग वन्दीगृह से छुटकारा पायेंगे। समय आया जब अवधी पूरी हो गई और माता पिता तथा उसकी संतान वन्दीगृह से छुटकारा पा कर बाहर आये। बाहर आने पर माता पिता तो हर्षित हो गये परन्तु उनकी संतान दुखी हो गई। और जब तक वन्दीगृह के बाहर के सम्पर्क से उनका यह अनुभव नहीं हुआ कि वह बन्दीगृह था और बुरी जगह थी और वह संसार नहीं था तब तक वह हर्षित नहीं हुए। इसी प्रकार प्रकृति ने हम लोगों को अपने कर्मों के प्रायश्चित करने के वैसे ही आनन्द ले रहे हैं जैसे वन्दियों की संतान वन्दीगृह में आनन्द ले रही थी और इससे निकलने का प्रयास नहीं करते। सतगुरु की दया से जब कोई मनुष्य संसार के दु:ख सुख से उपराम हो

जाता है तब उसको अनुभव होता है कि हम तो संसार में बन्दी बने हुए थे और अब उससे मुक्त हो गये। हम बन्दीगृह के आधीन नहीं हैं बल्कि बन्दीगृह यानी संसार हमारे आधीन है।

बैसाखी सतसंग
13, 14, अप्रैल 1980

बैसाख़ी का सतसंग हर वर्ष होता है। इस बर्ष भी होगा। मैं अपने आप से पूछता हूं कि तुमने यह स्यापा क्यों गले डाला हुआ है? मजबूरी। यह संसार जिस में हम रहते हैं यह सारे का सारा ही स्यापा है। मेरा भाग्य! मौज मालिक! उस अपने आद घर की तलाश के सिलसिले में १९०५ ई० में एक दृष्य द्वारा दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले आई। वहां से मुझे यह राधास्वामी मत या संतमत मिला। इस में सब से अधिक बल शुद्ध आचरण, गुरु की महिमा और अनहद मार्ग पर दिया गया है।

मैं 94 वर्ष का हूं। मेरी सारी आयु इस तलाश में गुजर गई। हिन्दुओं ने कुछ कहा, वेदान्त ने कुछ कहा, मुस्लमान, ईसाई और निरंकारी आदि जितने मत मतान्तर हैं सब में मत भेद केवल शब्दों

का है। यह केवल संतमत में ही अनहद मार्ग नहीं बल्कि उपनिषदों के ऋषियों का भी यही मार्ग है मगर सत कबीर साहिब जो आद संत माने जाते हैं वह सतगुरु किस को मानते हैं ?उन की बानी है :

सन्तों सो सतगुरु मोहे भावे
जो आवागवन मिटावे।
डोलत डिगे न बोलत बिसरे
अस उपदेश दृढ़ावे
बिन भ्रम, हठ, किरया से न्यारा
सहज समाध लगावे
द्वार न रोके पवन न रोके
न अनहद उरझावे।

मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा आज कल सब जगह गुरुमत का ज़ोर है। सब संत मत वाले अपने अपने चेलों को कोइ न कोइ नाम देते रहते हैं मगर कबीर साहिब का शब्द कहता है कि सतगुरु वह पूर्ण हस्ती है जो इन्सान को अनहद शब्द में भी ना फँसावे। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं क्या उन्होंने सच लिखा है ? मेरे निज जीवन का अनुभव मुझे सिद्ध करता है कि उन्होंने सच कहा है। इस लिये मैं इस वैसाखी पर अपने 74 साल के जीवन का अनुभव जो अनहद से भी परे

की अवस्था है वह बताऊंगा। जो सज्जन परमार्थ, सच्चाई और हकीकत की चाह रखते हैं केवल वही पधारें यह कोई मेला नहीं है। ठहरने और भोजन का प्रबन्ध मानवता मन्दिर का ट्रस्ट करेगा। आने वाले सज्जन अपना बिस्तर साथ लायें।

दाता से प्रार्थना है कि यह मेरी अन्तिम बैसाखी हो। गुरु ऋण सिर पर था उतारना चाहता हूं।

फकीर

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सतसँग
17-2-80 को होगा ।

Regd. No. 26265/74 FEBRUARY 10th 1980
MANAV MANDIR NW—HSP—7

ADDRESS

To

934 Shri Chilver Narsimulu
Muneem P.O. & Tq.
Banswoda Distt. Nizamabad
A.P.

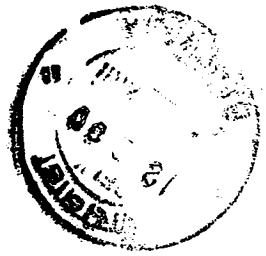

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.

Phone : 2022